श्री सौभाग्य मुनिजी 'कुमुद'
(श्रमण संघीय महामन्त्री)

भगवती सूत्र में परामनोविज्ञान एवं पराशक्तियों के तत्त्व

मानव मन ज्ञात, अज्ञात, असंख्य अनन्त संवेदनाओं का समूह-सा है, प्रतिक्षण उसमें संवेदना तरंग तरंगित होती रहती है। हम प्रत्यक्ष में जो अनुभव करते हैं वह मानसिक संवेदनाओं का ही प्राकट्य है। किन्तु यह तो उसकी अनुभवित संवेदनाओं का न्यूनातिन्यून भाग है। जो अप्रकट तथा असंवित् है, वह तो अपार है।

विश्व में अनेक प्राकृत रचनाएँ बड़ी जटिल हैं जिन्हें समझना मानव के लिए बड़ा कठिन है। उन सभी दुरूह जटिल रचनाओं में मानव का मन जटिलतम पदार्थ है इसका अध्ययन कठिन ही नहीं कठिनतम है।

मनोविज्ञान, मानसविज्ञान, लेश्या अंकन, मनसंवित्, संज्ञासंज्ञान ये सारे शब्द व्याख्या की कुछ-कुछ भिन्नता के साथ एक ही विषय को अभिव्यक्त करते हैं।

मानव मन की जटिलतम गुत्थी को ज्यों-ज्यों सुलझाया गया, प्रायः देखा गया है कि उसके आर-पार अनेकानेक नवीन विशेषताएँ उद्घटित होती रहीं। अपरा-परा अनेक शक्तियों का उसमें खजाना खुलता गया।

मानस की परा-अपरा शक्तियों को समझने-परखने और उन्हें उद्घाटित करने का प्रयत्न वैज्ञानिक युग में ही सम्भव हो सका, ऐसा सोचना कूपमंडूकता होगी। भारत ही नहीं विश्व-भर में जहाँ-जहाँ मानवीय सभ्यता का तनिक भी उत्थान हुआ मानस अध्ययन का क्रम भी वहाँ प्रचलित हुआ और मानवीय सभ्यता के चरम विकास में यह भी अपनी चरम योग्यता के साथ उपस्थित रहा।

शास्त्र, ग्रन्थ, शिलालेख एवं पुरातत्व से सम्बन्धित वस्तुओं से हमें अपनी प्राचीन सभ्यताओं के प्रमाण मिलते हैं। श्रीमद् भगवती सूत्र श्रमण संस्कृति का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ-राज है। भगवान् महावीर द्वारा प्ररूपित तत्व जो सुधर्म स्वामी के द्वारा सूत्रित किये गये हैं। इसमें बड़ी संख्या में उपलब्ध है। जीव और जगत सम्बन्धी हजारों विषयों पर कहीं संक्षिप्त, कहीं विस्तृत प्रकाश डाला गया है यही कारण है कि जैन वाङ्मय में इस ग्रन्थ-राज का अप्रतिम स्थान है।

प्रश्न और उत्तर के रूप में हजारों प्रज्ञप्तियाँ इसमें संकलित हैं। इस सूत्र-राज में परामनोविज्ञान से सम्बन्धित अनेक ऐसे संकेत सूत्र और व्याख्या सूत्र है, जिनका आधुनिक शैली से विश्लेषण करने से परामनोविज्ञान के अनेक तथ्य उद्घाटित हो सकते हैं। इस क्षेत्र के विद्वानों का इस तरफ ध्यान आकर्षित करने के लिए यहाँ हम उन संकेत सूत्रों में से कतिपय सूत्र उपस्थित करते हैं।

परभविक ज्ञान

१—गौतम स्वामी भगवान् महावीर से एक बार प्रश्न करते हैं कि प्रभु! ज्ञान इहभविक है, परभविक है, या तदुभयभविक है?

उत्तर में भगवान महावीर कहते हैं कि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गौतम ! ज्ञान इहभविक भी हैं परभविक भी हैं और तदुभयभविक भी हैं ?[1]

इस सूत्र से परभविक ज्ञान के अस्तित्व की स्पष्ट स्वीकृति है। परभविक ज्ञान उसे कहते हैं जो मृत्यु के बाद नये जीवन में भी साथ रहे। इससे एक जन्म में पूर्वजन्मों की स्मृति होना सिद्ध होता है।

भविष्य की बात जान लेना

२—भगवान महावीर गौतम को कहते हैं गौतम ! आज तुम अपने पूर्वभव के साथी से मिलोगे ?

भगवान ! मैं आज किस साथी से मिलूंगा ?

भगवान ने कहा—तू स्कंद परिव्राजक से मिलेगा।

फिर गौतम पूछते हैं कि क्या वह आपके पास दीक्षित होगा ?

भगवान महावीर ने इसका उत्तर स्वीकृति में दिया।[2]

परोक्ष को प्रत्यक्ष जानना-देखना

निर्ग्रन्थ मुनि के एकाग्रतापूर्वक ज्ञान करने के एक प्रश्न के उत्तर में भ. महावीर ने कहा कि कभी वह वृक्ष के बाह्य को ज्ञात कर लेता है, देखता है किन्तु अन्तर् को न ज्ञात कर पाता है और न देख पाता है। कभी बाह्य को ज्ञात नहीं कर पाता किन्तु अन्तर् को ज्ञात भी कर लेता है और देख भी लेता है।

कभी ऐसा होता है कि न बाह्य और न अन्तर को ज्ञात कर पाता है, न देख ही पाता है किन्तु कभी दोनों को देख भी लेता है और जान भी लेता है।[3]

तप आदि विशिष्ट साधना करने वाले मुनि को कुछ ऐसी परामानस शक्तियाँ उपलब्ध हो जाती हैं कि वे मुनि उनसे परोक्ष वस्तु को प्रत्यक्ष जान व देख सकते हैं। ऐसा संसूचन उपर्युक्त सूत्र से उपलब्ध हैं।

पराशक्तियाँ

एक प्रश्न के उत्तर में यह भी स्पष्ट हुआ कि तप संयम के साधक मुनि अपूर्व बलशाली और शक्ति सम्पन्न हो जाते हैं, वे बाह्य अणु परमाणुओं को ग्रहण कर न केवल अपने अनेक रूप बना सकते हैं अपितु वे दुर्लंघ्य पर्वतों को भी लांघ जाते हैं ऐसा वे वैक्रिय नामक पराशक्ति से करते हैं।[4]

वैक्रिय नामक पराशक्ति से सम्पन्न मुनि के द्वारा ऐसे और भी अनेक विलक्षण कार्य सम्पन्न हो सकने के उल्लेख इसी क्रम में उपलब्ध होते हैं।

मानस प्रश्न और समाधान

दो देवों ने मन में ही भ. महावीर को प्रश्न किया कि आपके कितने मुनि सिद्ध होंगे। भ. महावीर ने उस मानस प्रश्न का मानस उत्तर देते हुये कहा—मेरे ७०० शिष्य सिद्ध होंगे।[5]

ये मानसिक प्रश्नोत्तर मन की अद्भुत विशेषताओं का परिचय देते हैं।

पुनर्जन्म का स्मरण

श्रावक सुदर्शन को भ. महावीर ने धर्मोपदेश दिया उसे श्रवण कर वह अत्यन्त हर्षित हुआ तथा पवित्र अध्यवसाययुक्त हुआ तभी उसे "सण्णी पुव्व जाईसरणो समुप्पन्ने" अर्थात् अपने पूर्व संज्ञी जन्म को स्मृत करने वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ।

सुदर्शन गृहस्थ मानव था फिर भी उसको अपने अध्यवसाय के निरन्तर विकास से पूर्व-जन्म की स्मृति हो गई यह एक महत्वपूर्ण बात है।

पूर्व-जन्म के अनेक उदाहरण गत कुछ वर्षों में प्राप्त हुए उनका वैज्ञानिक प्रविधियों से अंकन भी हुआ किन्तु इस प्रश्न की चुनौती अभी तक ज्यों की

१. भगवती सूत्र शतक १ उद्देशक सूत्र क्रम ५४
२. भगवती सूत्र शतक २ उद्देशक १
३. भगवती सूत्र शतक ३ उद्देशक ४
४. भगवती सूत्र शतक ३ उद्देशक ५
५. भगवती सूत्र शतक ५ उद्देशक ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्यों बनी हुई है। इतना ही नहीं इस क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने जितना अध्ययन किया उससे अनेक ऐसे नये प्रश्न खड़े हो गये कि जिनका समाधान मिलना और दुश्वार हो गया है।

अब तक प्राप्त पुनर्जन्म के प्रकरणों में अधिकांश ऐसे ही प्रकरण हैं जिनके पात्र बालक या बालिका हैं। जो बड़ी उम्र के नहीं हो गये हैं ऐसे बच्चों में पूर्व-जन्म की स्मृति जन्म से ही सतत बनी रही, अभिव्यक्ति का सामर्थ्य आने पर उसने प्रकट की। अभी ऐसा उदाहरण एक भी नहीं मिल पाया कि कोई बड़ी उम्र का व्यक्ति अपने मानस क्रम को विकसित कर पूर्व-जन्म स्मृति का पात्र बना हो।

यहाँ सुदर्शन का जो प्रसंग उपस्थित किया गया है इसकी यह विशेषता है कि यह एक बड़ी उम्र का गृहस्थ था। साथ ही पहले पूर्व-जन्म स्मृति से शून्य था किन्तु किसी विशेष अवसर पर वह अपना मानस क्रम इतना विकसित कर पाया कि वह उस उम्र में भी पूर्व-जन्म की स्मृति का पात्र बन गया।

यद्यपि इस घटना का शास्त्रोक्त उल्लेख के अलावा कोई चिन्ह उपस्थित नहीं है फिर भी इस घटना से इतना तो संसूचन हो हो जाता है कि मानव का मानस क्रम यदि विकसित हो सके तो उसमें अनेकानेक आश्चर्यजनक संज्ञप्तियों की अपार सम्भावनाएँ उपलब्ध हैं।

परभाव ज्ञप्ति

बहुत दूर रहते हुए व्यक्ति के विचारों को जान लेना मानस की एक ऐसी प्रतिभा है जिस पर आम व्यक्ति प्रायः विश्वास नहीं किया करते किन्तु यह एक ऐसा सत्य है जो युगों-युगों से प्रकट होता रहा है। वीतिभय नगर का राजा उदायन अपनी पौषध आराधना में स्थित है और अपने भाव बनाता है कि भगवान महावीर प्रभु यहाँ पधारें तो मैं उनकी उपासना करूँ।

भगवान् महावीर उस समय चम्पा नगर के बाहर पूर्णभद्र उद्यान में विराजित थे। उन्होंने वहीं उदायन के विचारों को जान लिया और वहाँ से लम्बे भूखण्ड को पार कर वीतिभय पधारे। उदायन ने भगवान् महावीर का बड़ा सम्मान किया, उनका उपदेश सुना और उनके पास दीक्षित हो गया, मुनि बन गया।[1]

प्रत्येक व्यक्ति अन्य व्यक्ति के विचारों को जानने-समझने का प्रयत्न प्रायः करता ही है। कुछ ऐसे संकेत भी मानव पकड़ लेता है जिससे सामने वाले या दूरस्थ व्यक्ति के विचारों का वह जान सके और कई बार उसका जाना हुआ सच भी सिद्ध होता देखा गया है तो इससे यह तो सिद्ध है कि व्यक्ति का मन परभाव ज्ञप्ति की एक शक्ति अपने आप में रखता अवश्य है। यह एक अलग बात है कि कुछ व्यक्तियों में यह शक्ति प्रसुप्त रहती है तो कुछ व्यक्ति इसे जाग्रत कर लेते हैं। मानस शक्ति जागरण के भी अनेक स्तर हैं। कुछ अमुक स्तर तक ही अपने में जागृति पा सकते हैं, तो कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जिनमें पूर्ण जागृति विकसित हो चुकी हो। परभाव ज्ञप्ति के हजारों उदाहरण प्रायः सभी धर्मग्रन्थों में पाये जाते हैं, उनकी सम्यक् समीक्षा होनी चाहिए।

यह निश्चित तथ्य है कि मानव मन में निश्चय ही ऐसी पराशक्तियाँ विद्यमान हैं जो सामान्यतया कल्पनातीत हैं। ग्रन्थों आख्यानों से इस विषय की जितनी भी सामग्री उपलब्ध हैं उस सभी का व्यवस्थित संकलन होकर उनकी गम्भीर समीक्षा हो तो इस विषय में अनेक अनुद्घाटित तथ्य प्रकाशित हो सकते हैं।

ज्वलनशील पराशक्ति—

श्रीमद् भगवती सूत्र के गोशालक आख्यान में तेजोलेश्या का एक ऐसा अद्भुत प्रसंग है जिसे पढ़कर चेतना की एक ऐसी पराशक्ति का परिचय

---

१ भगवती सूत्र शतक १३ उद्देशक ६

साध्वीरत्न कुसुमवती अभिनन्दन ग्रन्थ
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिलता है जो सचमुच आश्चर्यजनक है। गोशालक एक तपस्वी वेश्यायन को देखकर उसे तिरस्कृत करता है, यह तपस्वी गोशालक पर कुपित होता है और उस पर एक ऐसा तेज फैंकता है जो ज्वलनशील है। गोशालक जल ही जाता उस तेज से किन्तु भगवान् महावीर उस पर करुणा कर तत्काल शीतल तेज प्रकट करते हैं और वह शीतल तेज उस उष्ण तेज को नष्ट कर देता है। गोशालक बच जाता है। शास्त्रीय भाषा में 'उष्ण तेज को तेजोलेश्या कहा है तथा शीतल तेज को "शीतल तेजोलेश्या" कहा है।[1]

प्रस्तुत प्रसंग में 'तेजोलेश्या" जिसे कहा गया वह तपस्वी के शरीर से बाहर प्रकट हुई है, इसी तरह 'शीत तेजोलेश्या' भी भगवान् महावीर के देह से बाहर आई है।

चेतना की यह तेजोमय पराशक्ति नितान्त अद्भुत और आश्चर्यजनक है। इसी आख्यान में तेजस्वी पराशक्ति "तेजोलेश्या" को अपने में उपलब्ध करने का उपाय भी प्राप्त होता है। उपाय स्वरूप जो बताया गया वह एक उग्र किन्तु कठोर तप है और उसके साथ सूर्य ताप को निरन्तर सहते हुए छह माह साधना करने का विधान है। सूत्रगत यह आख्यान इतना तो स्पष्ट करता ही है कि चेतना एक ऐसा शक्ति का केन्द्र है जिसमें शक्ति का अपार कोष निहित है उन शक्तियों को विशिष्ट प्रयोगों से प्रकट भी किया जा सकता है।

एक में अनेक रूप पराशक्ति

भ० महावीर के सामने एक प्रश्न आया कि क्या चौदह पूर्वधर मुनि एक घड़े में से हजार घड़े दिखा सकते हैं? समाधान देते हुए भ० महावीर ने कहा कि हाँ ऐसा वे कर सकते हैं। जब प्रतिप्रश्न हुआ कि ऐसा कैसे हो सकता है, तो समाधान था कि चौदह पूर्वधर "उत्कारिका भेद" द्वारा भिन्न अनन्त द्रव्यों को प्राप्त करते हैं। और उनसे ही वे ऐसा कर सकते हैं।[2]

इस प्रकरण में "उत्कारिका" रूप विशिष्ट पराशक्ति विचारणीय विषय है।

तीव्रातितीव्र गमन पराशक्ति

भगवती सूत्र के बीसवें शतक के ९वें उद्देशक में चारण मुनियों की तीव्रगति का विषय व्याख्यायित हुआ है। विद्या चारण एवं जंघा चारण दो तरह के चारण मुनि होते हैं और उनकी गगनगामिनी शक्ति आश्चर्यजनक होती है वे एक चुटकी लगाने जितने थोड़े से समय में जम्बूद्वीप के चारों तरफ चक्कर लगा आते हैं। यह अद्भुत पराशक्ति भी मुनि को विशेष तप साधना से ही प्राप्त होती है। ऐसा विधान है।

इस तरह भगवती सूत्र में परामनोविज्ञान और पराशक्तियों के अनेक उल्लेख उपस्थित हैं। यद्यपि ऐसे उल्लेख प्रथम दृष्टया आश्चर्यजनक तथा अतिरंजित प्रतीत होते हैं किन्तु यह अपनी स्थूलग्राही दृष्टि का ही परिणाम है। जीवन में निहित अनन्त सम्भावनाओं के सन्दर्भ में यदि ये तथ्य देखे जाएँ तो ये कदापि असम्भव नहीं होंगे। आज जीवन की पराशक्तियों को तर्कप्रधान विज्ञान ने न केवल स्वीकार किया इस क्षेत्र को शोध का विषय भी बनाया है।

अभी अमेरिका आदि अनेक यूरोपियन देशों ने और भारत में पराशक्तियों पर अनुसन्धान चल रहे हैं। श्री अम्बागुरु शोध संस्थान ने भी अपना एक उपक्रम इस दिशा में स्थापित किया है। परा-क्षेत्र में ज्यों-ज्यों वैज्ञानिकों की पैठ हो रही है, त्यों-त्यों अनेक अज्ञात रहस्य हस्तामलकवत् निःसंशय और प्रत्यक्ष होते जा रहे हैं।

यहाँ हमने मात्र भगवती सूत्र से प्राप्त कतिपय परा-प्रसंग उपस्थित किये हैं, इसी ग्रन्थ में और भी अनेक परा-संसूचक वृत्त उपस्थित हैं, ऐसे ही जैन वाङ्मय के सूत्रों ग्रन्थों जीवन वृत्तों में और भी अनेक घटनाएँ उल्लिखित हैं। आर्यों की आत्मा सम्बन्धी विचार पद्धति में आत्मा को अनन्त शक्ति-

१ भगवती सूत्र शतक ५ उद्देशक ४

२ भगवती सूत्र शतक ५ उद्देशक ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मान द्रव्य के रूप में स्वीकार किया गया है जीवन आत्मा का परिणमन ही है इसमें पुरुषार्थ एवं क्षयोपशम की विचित्रता से अनेकानेक आश्चर्यजनक परिणाम भी होते रहते हैं। वे परिणमन आत्मशक्ति के उद्भव-पराभव के परिणामस्वरूप हैं। जीवन का व्यक्त अंश अत्यन्त अल्प है अव्यक्त तो अपार है। परा-मनोविज्ञान और पराशोध उन्हीं विषयों को खोलने का प्रयत्न कर रहा है।

आशा है वैज्ञानिकों का यह प्रयास भविष्य में जीवन के ऐसे अद्भुत किन्तु परम सत्य तथ्य प्रकाश में ला सकेगा जो प्रत्येक जीवन में शाश्वत स्वधर्म रूप निर्बाध रूप से स्थित हैं। □

(शेष पृष्ठ ३७७ का)

तुलना की जाए तो संभव है हम इन स्थलों की पहचान कर सकते हैं। इसी प्रकार और स्थलों की भी तुलना करना उपयोगी होगा।

इस प्रकार जैन भूगोल को आधुनिक भूगोल के व्यावहारिक पक्ष के साथ रखकर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जैन भूगोल का समूचा पक्ष कोरा बकवास नहीं है। उसके पारिभाषिक शब्दों को आधुनिक सन्दर्भों के साथ यदि मिलाकर समझने की कोशिश की जाए तो संभव है कि हम काफी सीमा तक जैन भौगोलिक परम्परा को आत्मसात् कर सकेंगे।

इस सन्दर्भ में यह द्रष्टव्य है कि जैनाचार्यों ने भूगोल को इतना प्रमुख विषय नहीं बनाया। परन्तु देश, नगर, पर्वत आदि का वर्णन करते हुए समय, जलवायु, आकृति आदि का वर्णन अवश्य किया है। उन्होंने कृषि, उद्योग, व्यापार आदि का भी सुन्दर चित्रण किया है, साथ ही सांस्कृतिक परम्पराओं का भी मूल्यांकन किया है। इन सारे सन्दर्भों को यदि वैज्ञानिक रीति से संकलित किया जाए तो निश्चित हो व्यावहारिक भूगोल की सुन्दर रूपरेखा हमारे समक्ष प्रस्तुत हो सकती है। यहाँ शोधकों को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। कवियों ने राजाओं, नदियों, पर्वतों और नगरों आदि के अभिस्तोतों का भी अनुवाद कर दिया है, जिससे उनके यथार्थ नामों का पता करना दुष्कर हो गया है। इसी तरह संख्या आदि के समय अतिशयोक्ति का उपयोग किया जाता है जिससे साधारण पाठकों का विश्वास डगमगाने लगता है। इन सारे सन्दर्भों का समाधान खोजते हुए व्यावहारिक भूगोल की संरचना की जाना आवश्यक है।

—न्यू एक्सटेंशन एरिया, सदर, नागपुर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org